रजि. नं. पी.बी./जे.एल.-/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष-71, अंक : 10, 5/8 जून 2014 तदनुसार 26 ज्येष्ठ सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

हिंसक को मोक्ष धन नहीं मिलता

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्त्रेधन्तं रयिर्नशत्।
सुशक्तिरिन्मघव तुभ्यं मावते देष्ण यत्पार्ये दिविध।।

-सा. 4/43/32

शब्दार्थ-दुष्टुतिः= बुरी कीर्ति वाला, दुष्ट साधनों वाला, **द्रविणोदेषु**= धनदाताओं में **न**= नहीं **शस्यते**= गिना जाता, अच्छा माना जाता। **स्त्रेधन्तम्**= हिंसक को, **रयिः** =धन, मोक्षधन, **न** = नहीं, नशत्= प्राप्त होता। हे मघवन्= पूजनीय धनवन् भगवन्! मावते=मेरे जैसे के लिये पार्ये= पार पाने योग्य दिवि= प्रकाशावस्था में देष्णम्= देने योग्य **यत्**= जो धन है, **सुशक्तिः**=उत्तम शक्ति वाला मनुष्य **इत्**= ही **तुभ्यम्**= तेरे निमित्त (उसको प्राप्त करता है)।

व्याख्या- इस मंत्र में जिस धन की चर्चा है वह साधारण धन=धन-धान्य, मकान, पशु आदि नहीं, वरन् शान्तिरूप धन है। वेद में कहा भी है- **शं पदं मघं रयीषिणे**- साम. 441, धनाभिलाषी के लिये शान्तिरूपी धन ही पद= प्राप्त करने योग्य है। लौकिक धन-धान्य तो चोर- डाकुओं के पास भी होता है। वैसे भी धन की अधिक मात्रा प्रायः अन्याय, अत्याचार, अनाचार से ही कमाई जाती है किन्तु इस धन से बुद्धिमानों की तृप्ति नहीं होती। याज्ञवल्क्य जब घर छोड़ कर संन्यासी बनने लगे तो उन्होंने धर्मपत्नी मैत्रेयी से कहा- आ मैत्रेयि! तेरा बंटवारा कर दें। इस पर मैत्रेयी ने पूछा:-

यन्नु मं इयं भगोः सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्।
स्यात्रवहं तेनामृता। **-बृहदा. 4/5/3**

भगवन्! धन-धान्य से पूर्ण यदि यह सम्पूर्ण पृथिवी मेरी हो जाए तो क्या मैं अमृत हो जाऊंगी?

सत्यदर्शी यथार्थवक्ता याज्ञवल्क्य उत्तर देते हैं-

नेति नेति....यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैत ते जीवितं स्याद्
अमृतत्वस्य नाशास्ति वित्तेन। **-बृहदा. 4/5/3**

नहीं, नहीं जैसे धन-धान्य सामान वालों का जीवन होता है, वैसे ही तेरा जीवन भी होगा। अमृतत्व की= मुक्ति की आशा= संभावना धन से नहीं हो सकती।

इस पर मैत्रेयी ने कहा=

येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्यां यदेव भगवान वेद तदेव मे ब्रूहि। **-बृहदा. 4/5/4**

जिससे मैं मुक्त न हो सकूं, उससे मेरा क्या प्रयोजन? महाराज ! मोक्ष का जो भी साधन आप जानते हैं, वहीं मुझे बताइए।

धन के प्रति कितनी ग्लानि है। कितना गहरा निर्वेद है। सचमुच मोक्षाभिलाषी, शान्ति की कामना वाला इस चंचल धन को कैसे चाहेगा, जिसके सम्बन्ध में वेद स्वयं कहता है-

ओ हि वर्तन्त रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः।।

-ऋ. 10/117/5

अरे धन तो सचमुच एक से दूसरे के पास जाते हुये रथ के चक्रों की भान्ति अदलते-बदलते रहते हैं। ऐसे विनश्वर भौतिक धन में अविनाशी के अभिलाषी की अभिलाषा कैसी!!! इसीलिये प्रकृत मंत्र में कहा है-

न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते।

दुष्ट साधनों वाला मनुष्य धनदाताओं में नहीं गिना जाता। जब उसके पास है ही नहीं, तब देगा कहां से? वेद पाने की बात न कह कर देने की बात कहता है, क्योंकि वेद दान की महत्ता का प्रचारक है। ऋग्वेद ने तो स्पष्ट कह दिया।

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु।

-ऋ. 7/32/21

मनुष्य दुष्ट उपायों से धन प्राप्त नहीं कर सकता। दूसरे चरण मे बहुत स्पष्ट कहा है-

न स्त्रेधन्तं रयिर्नशत्- हिंसक भी धन नहीं प्राप्त कर सकता। कितना ही शास्त्रवेत्ता क्यों न हो, जब तक हिंसादि दुष्ट उपायों को नहीं छोड़ता तब तक शांति-धन, आत्म-सम्पत्ति को नहीं प्राप्त कर सकता। यम ने मार्मिक शब्दों में नचिकेता को समझाया था-

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात।। **-कठो.2/22**

जो दुराचार से नहीं हटा, जो चंचल है, जो प्रमादी है, सावधान नहीं है, जिसके मन में क्षोभ है, वह बुद्धि से, ज्ञान से इस आत्मा को नहीं प्राप्त कर सकता।

आत्मज्ञान के बिना शान्ति नहीं। जब प्रमाद तथा अनाचार से आत्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती तब उसकी प्राप्ति के बाद प्राप्त होने वाले शान्ति-सम्पत्ति की प्राप्ति की आशा कैसे की जा सकती है?

वेद कहता है, देने योग्य धन को कोई शक्तिशाली ही प्रभुसमर्पण की भावना से प्राप्त कर सकता है। बलहीन का संसार में ही ठिकाना नहीं, परलोक की तो बात ही क्या? वहां के लिये उपयुक्त धन कमाने को बड़ा बल चाहिए। **-स्वाध्याय संदोह से साभार**

आचार्य देवो भव

-ले० डा. रविदत्त शर्मा एम.ए. (वेद) आर्य समाज शामली

तैत्तिरीय संहिता में उपदेश दिया गया है कि आचार्य को देवता मानो, आचार्य देवता वाले बनो। ब्रह्मचारी जिस समय विद्या पूर्ण करके गृहस्थ की ओर जाता है तो उस समय तैत्तिरीय उपनिषद् के अनुसार आचार्य को धनरूपी दक्षिणा प्रदान करके गृहस्थ में प्रवेश करने का आदेश है। पारस्कर गृह्यसूत्र में छ प्रकार के व्यक्तियों को अर्घ्य अर्थात् पूज्य बताया गया है, इनमें आचार्य का सर्वप्रथम उल्लेख है। मुण्डकोपनिषद् में उल्लेख है कि परतत्व के विशेष ज्ञान के लिये जिज्ञासु समित्पाणि होकर-हाथ में अपनी श्रद्धा के अनुसार पदार्थ लेकर, श्रोत्रिय-ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास जावे-

तद् विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः। श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्।।

-मु० १.२.१२

यहाँ समित्पाणिः का भाव है श्रद्धानुसार हाथ में कुछ भेंट लेकर गुरु के पास जावे। ज्ञान प्राप्त करने की यही परिपाटी है। पूर्वार्द्ध में दो बातें आयी हैं कि तत्वज्ञान के लिये ऐसे गुरु के पास जाना चाहिये जिसमें दो गुण हों। पहला यह कि वह श्रोत्रिय हो, वेदपारंगत हो, वेद के समस्त रहस्य को जानता हो और दूसरों को भली-भाँति समझा सकता हो। दूसरी बात है कि वह ब्रह्मनिष्ठ हो। इसके दो अर्थ हैं; एक तो यह कि वह ईश्वर विश्वासी हो, प्रभु के लिये अपने को समर्पित कर चुका हो, दूसरा अर्थ है कि उसने ज्ञान को जीवन में ढाल लिया हो। यह गुरु या आचार्य की योग्यता का निर्धारण है। यास्काचार्य ने आचार्य शब्द की निरूक्ति की है कि आचार्य आचरण को ग्रहण कराता है; विभिन्न विषयों को विधिपूर्वक व्यवस्थित करता है, वह बौद्धिक शक्ति को विकसित करता है-'आचार्यः कस्मादाचार्यः आचारं ग्राहयत्याचिनोत्यर्थानाचिनोतिबुद्धिमिति वा।' निरूक्त-१.४.१२

आचार्य स्वयं पवित्र आचरण वाला होगा तभी शिष्यों को आचारवान् बना पायेगा। बौद्धिक विकास का सम्बन्ध ज्ञान से है। यास्काचार्य द्वारा दी गयी परिभाषा अपने में पूर्ण है। मनुजी का मत है कि जो द्विज उपनयनसंस्कारपूर्वक शिष्य को कल्प और उपनिषद सहित वेद पढ़ता है, वह आचार्य कहलाता है-

उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः।
सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते।। -२-१४०

याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार वह गुरु होता है जो उपनयन तक की क्रियाएँ करके ब्रह्मचारी को वेद का ज्ञान देता है। केवल उपनयन संस्कार करके वेद प्रदान करने वाले को आचार्य कहा गया है-

स गुरुर्यः क्रियाः कृत्वा वेदमस्मै प्रयच्छति।
उपनीय ददद् वेदमाचार्यः स उदाहृतः।।

सामान्यतः विद्वज्जन उसे आचार्य मानते हैं जो उपनयन करे, वेद का ज्ञान प्रदान करे। इससे स्पष्ट है कि आचार्य वेदज्ञ होना चाहिये। आचार्य का कर्त्तव्य वेद पढ़ाना, यथाशक्ति वेद प्रचार करना है। आचार्य अपने कुल में अन्तेवासी को रखकर उपनयन करता है और तीन रात्रि उसे धारण करता है। जब वह ब्रह्मचारी विद्या के द्वारा प्रसिद्ध हो जाता है तो विद्वान् उसे देखने आते हैं-

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे विभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः।।

-अथर्व० ११.५.३

ब्रह्मचर्याश्रम निर्माण काल है और निर्माता है आचार्य। व्यक्तित्व के विकास के सम्बन्ध में माता-पिता से भी अधिक आचार्य का महत्त्व है। जीवन में सद्गुणों का समावेश ही इस आश्रम का उद्देश्य है। इसे माता-पिता पूर्ण नहीं कर सकते। शास्त्रों में आचार्य को यह कार्य सौंपा गया है। राम-कृष्णादि सभी महापुरुषों ने इस परम्परा का पालन किया। ब्रह्मचारी का जब विद्या प्राप्ति का समय आता है तो वह सर्वत्र खोज करता हुआ आचार्य की शरण में जाना चाहता है। विद्वान् उसके मन की बात को समझ जाते हैं और उसके कार्य में सहयोग देते हैं। ब्रह्मचारी कठोर तपस्या का व्रत लेता है और आचार्य ब्रह्मचारी के लिये इहलोक तथा परलोक दोनों का निर्माण करता है। आचार्य के प्रयास से भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ऐश्वर्य सुलभ हो जाते हैं। पृथ्वी और द्युलोक अर्थात् भोग और ज्ञान दोनों के लिये मार्ग प्रशस्त करता है। ब्रह्मचारी इन दोनों लोकों की रक्षा करता है, अपनी तपस्या को और अधिक उत्कृष्ट बनाता है तथा तपस्या के प्रभाव से सब विद्वान् उसके लिये एक मन हो जाते हैं-

आचार्यस्ततक्ष नभसी उभेइमेउर्वी गम्भीरे पृथिवीं दिवं च।
ते रक्षति तपसा ब्रह्मचारी तस्मिन् देवाः समनसो भवन्ति।

अथर्व० ११.५.८

जितनी भी शक्तियाँ हैं, उन सबका साक्षात्कार आचार्य करा देता है। मृत्यु पर विजय प्राप्त करना सिखाता है। जल-चन्द्रमा-औषधियाँ-दूध-मेघ इन से होने वाली उपलब्धियों से अवगत कराता है। ब्रह्मचारी में वीरता भरा है, मोक्ष सुख भोगने का पात्र बना देता है तथा जीवन की सभी समस्याओं को हल करने की क्षमता पैदा करता है-

आचार्यो मृत्युर्वरूणः सोम औषधयः पयः।
जीमूता आसन्त्सत्वानस्तैरिदं स्वराभृतम्।।

अथर्व० ११.५.१४

एक सामान्य छात्र को द्विज बनाना आचार्य का ही काम है। वह शिष्य को अपने जैसा अर्थात् आचार्य ही बना देता है। आचार्य उसे प्रजापति बनाता है अर्थात् गृहस्थ जीवन में अपनी प्रजा (सन्तान) का पालन भली-भाँति कर लेता है। विराट् बनाता है अर्थात् बहुमुखी प्रतिभा पैदा करता है जिससे शिष्य बड़े-से-बड़े पद के योग्य हो जाता है, शिष्य को इन्द्र बनाता है, वह सभी ऐश्वर्यो का पात्र हो जाता है। जितेन्द्रिय बनाता है-

आचार्यो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापतिः।
प्रजापतिर्विराजति विराजिन्द्रोऽभवद् वशी।।

-अथर्व० ११.५.१६

जहाँ वेद में आचार्य को कठोर कर्त्तव्य का परायण बताया है, वहीं दूसरी ओर अन्तेवासी के लिये भी बन्धन लगा दिया है कि कोई साधारण भोगी-विलासी-सुखार्थी आचार्य के पास न पहुँच जाय, केवल तपस्वी ही ऐसी योग्यता रखता है। आचार्य ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करने वाले को ही चाहता है। वेदविद्या को जीवन में ढाल सके और इन्द्रियदमन कर सके वही आचार्य का चहेता है-

आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्माचारिणमिच्छते।।

-अथर्व० ११.५.१७

+2 परीक्षा का परिणाम शत प्रतिशत रहा

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित 10+2 के परीक्षा परिणामों का स्थानीय आर्य माडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल बठिंडा के विद्यार्थियों ने अच्छे अंक प्राप्त कर स्कूल व माता पिता का नाम रोशन किया। यह जानकारी देते हुये आर्य माडल सी.सै.स्कूल बठिंडा के प्रिंसीपल विपिन गर्ग ने बताया कि स्कूल की कामर्स की छात्रा प्रेरणा धुड़िया ने 450 में से 406 अंक पास कर पहला स्थान प्राप्त किया और मनीषा ने 407 अंक व सिल्की ने 396 अंक प्राप्त कर दूसरा व तीसरा स्थान प्राप्त किया। स्कूल के प्रधान श्री पी.डी.गोयल ने सभी बच्चों व माता पिता को इस उपलब्धि पर बधाई दी। इस मौके पर स्कूल के सचिव श्री जगदीश राय बांसल, कोषाध्यक्ष श्री नवनीत कुमार, श्री गौरी शंकर एवं रमेश गर्ग उपस्थित थे।

-विपिन गर्ग

सम्पादकीय......

शरीर की रक्षा कैसे करें?

मानव की गणना संसार के उच्चतम प्राणियों में की जाती है। अत: इसमें शेष प्राणियों की अपेक्षा गुणों की आशा भी अधिकतम की जाती है। मानव अपना जीवन ठीक ढंग से तभी व्यतीत कर सकता है, जब उसे इसे व्यतीत करने का मर्म पता हो। इस प्रकार की जानकारी के लिए ठीक और स्वस्थ मस्तिष्क की आवश्यकता है और मस्तिष्क का सही रास्ते पर सोचना, यदि पूर्ण रूप से नहीं तो कुछ सीमा तक स्वस्थ शरीर पर निर्भर करता है। इसीलिए तो कहा जाता है कि एक स्वस्थ मस्तिष्क एक स्वस्थ शरीर में ही होता है। विचारणीय प्रश्न यह है कि शरीर स्वस्थ कैसे रह सकता है?

हमारे शरीर की रचना कुछ इस प्रकार की है कि थोड़ी सी चेष्टा से सब कार्य अपने आप होते चले जाते हैं। इसमें कोई विशेष परिश्रम या ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। इस बात का यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि शरीर की रक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं देना चाहिए। जीवन यात्रा में शरीर रूपी गाड़ी का सही होना अनिवार्य है। क्या हम दूसरी वस्तुओं की रक्षा नहीं करते? क्या हम उनकी देखभाल नहीं करते? अगर हम उन वस्तुओं की रक्षा और देखभाल कर सकते हैं तो शरीर की रक्षा क्यों नहीं कर सकते। मनुष्य जीवन की सभी क्रियाओं का आधार शरीर ही है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति भी इसी शरीर के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। मनुष्य जीवन में हम जो कुछ भी प्राप्त करना चाहते हैं उसके लिए सुन्दर और स्वस्थ शरीर का होना अति आवश्यक है। शरीर रक्षा की ओर ध्यान देना हम सब का परम कर्त्तव्य है।

मनुष्य के लिए स्वाभाविक ही है कि जैसे वातावरण में वह रहता है उसका मनुष्य जीवन पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। इसलिए सर्वप्रथम हमें यह देखना चाहिए कि जिस वातावरण में हमें जीवन व्यतीत करना है, वह शान्त और स्वच्छ हो। वायुमण्डल तभी स्वच्छ रह सकता है जब हम गन्दी और अशुद्ध वस्तुओं को खुले में न फैंके। दुर्गन्ध देने वाली वस्तुएं वातावरण को दुर्गन्धित करती हैं, जिसमें सांस लेने से हमारा बीमार होना अनिवार्य है। इस तरह से होने वाली बीमारियों को सफाई के द्वारा दूर किया जा सकता है।

शरीर रक्षा के लिए यह अति आवश्यक है कि अपनी दिनचर्या को नियमित किया जाए। प्रत्येक कार्य सही समय पर किया जाना चाहिए। महान् पुरूषों की दिनचर्या पर ध्यान देने से पता चलता है कि उनका प्रत्येक कार्य करने का एक नियत समय होता है। प्रारम्भ से ही ऐसे महापुरूषों की दिनचर्या नियमित रहती है। वे प्रात: ब्रह्म मुहूर्त में उठते हैं और अपने निवास से दूर जाकर खुले वातावरण में प्राणायाम, व्यायाम तथा सैर आदि करके स्नान आदि करने के पश्चात सन्ध्या, हवन यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्म करते हैं। परमात्मा की उपासना के पश्चात शुभ संकल्प लेकर अपने जीवन की शुरूआत करते हैं जिसके द्वारा व्यक्ति के अन्दर आत्मिक बल बढ़ता है और सारा दिन वह मनुष्य श्रेष्ठ कार्य करता है। मनुष्य की दिनचर्या नियमित होने से उसे अपने कार्य और लक्ष्य को पूरा करने में कोई बाधा नहीं आती जिससे उसका शरीर भी स्वस्थ रहता है और वह अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में भी सफल होता है।

यदि आज के समय में हम मनुष्य की दिनचर्या का विश्लेषण करें, उसके जीवन पर दृष्टि ड़ाले तो उसमें कोई विशेष नियम नहीं दिखाई देता। हम न समय पर सोते हैं और न उठते हैं। आजकल देर रात के बाद सोना एक फैशन बन गया है। ऐसे लोग सुबह सूर्य उदय होने के काफी बाद तक सोए रहते हैं। इन्हें इस बात का पता ही नहीं होता है कि सूरज कब निकलता है। पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करने के कारण मनुष्य अपनी दिनचर्या पर ध्यान नहीं देता जिसका उसके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जब नियमों का पालन नहीं होगा तो दिनचर्या नियमित नहीं हो सकती और दिनचर्या नियमित न होने से मनुष्य अपने सभी कार्य भाग दौड़ के साथ करेगा। इस तरह भाग-दौड़ से कार्य करने पर उसका शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। यदि मनुष्य के भोजन की ओर भी ध्यान दिया जाए तो भी स्पष्ट हो जाता है कि हमारा भोजन भी आवश्यक तत्त्वों से युक्त न होकर केवल स्वाद और पेट भरने के उद्देश्य से ही बनाया जाता है। इससे शरीर की रक्षा नहीं होती और न ही यह ठीक ढंग से कार्य करने की क्षमता रख पाता है, अपितु नाना प्रकार की बीमारियों से घिर जाता है। मनुष्य का भोजन सात्विक तथा पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर होना चाहिए। भोजन में वे सभी आवश्यक तत्त्व होने चाहिए जो शरीर को स्वस्थ रख सके। मनुष्य को अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मादक द्रव्यों तथा नशे आदि से भी दूर रहना चाहिए। स्वास्थ्य मनुष्य की एक अमूल्य निधि है। इसीलिए हमारे ऋषियों ने कहा-धर्मार्थकाममोक्षाणाम् आरोग्यं मूलकारणम्। अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए शरीर का निरोग होना आवश्यक है। शरीर के स्वस्थ होने पर ही मनुष्य परमात्मा की उपासना कर सकता है, ध्यान लगा सकता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि शरीर की रक्षा करना हमारा मूल धर्म है। इस धर्म का पालन करने के लिए आवश्यक है कि हमारा प्रात: उठने का समय नियत होना चाहिए। प्रात: सैर अवश्य करनी चाहिए। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम भी किया जाना चाहिए। हमारा आहार-विहार नियमित होना चाहिए। भोजन शुद्ध और सन्तुलित होना चाहिए। अपने आस-पास की सफाई की ओर ध्यान देना भी शरीर की स्वस्थता के लिए आवश्यक है। यदि इन बातों पर थोड़ा-थोड़ा ध्यान देना आरम्भ कर दिया जाए तो धीरे-धीरे हमारे जीवन में परिवर्तन आता है और थोड़े समय के पश्चात यह मनुष्य जीवन का स्वभाव बन जाता है। यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि इन आठ योग के अंगों के द्वारा अपनी दिनचर्या को नियमित किया जा सकता है। शरीर के स्वस्थ रहने पर मनुष्य का जीवन सुखी बन जाता है। इस प्रकार मनुष्य धर्म, अर्थ, काम को प्राप्त करता हुआ मोक्ष का अधिकारी बन जाता है। इसलिए हमें विशेष रूप से अपनी दिनचर्या, खान-पान, रहन-सहन, सोना जागना आदि क्रियाओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है जो हमें जीवन के लक्ष्य तक पहुंचाने का कार्य करती हैं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

भूमि एवं जायदाद सुरक्षा उपसमिति की बैठक सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने पिछले दिनों सभा के कार्य को और तेज करने के लिये दो उपसमितियों का गठन किया था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की पंजाब में भूमियों एवं भवनों की सुरक्षा उपसमिति की एक बैठक दिनांक 31 मई 2014 को सभा कार्यालय में प्रात: 11.00 बजे हुई जिसमें उपसमिति के संयोजक श्री शादी लाल जी महेन्द्रु, सदस्य श्री देशबन्धु जी चोपड़ा फगवाड़ा, श्री रातुल शर्मा जी जालन्धर, श्री वीरेन्द्र कौशिक जी पटियाला, श्री नीरज सूद एडवोकेट मोगा, श्री भारत भूषण मेनन एडवोकेट बरनाला, श्री योगेश सूद जी मोरिण्डा पधारे। इस भूमि एवं जायदाद सुरक्षा उपसमिति ने गहन विचार-विमर्श किया। तत्पश्चात निश्चय हुआ कि पंजाब को चार जोनों में बांट कर सम्पत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाये। यह चार जोन निम्न प्रकार से हैं:

जोन एक में जालन्धर, नवाशंहर, कपूरथला, लुधियाना, होशियारपुर होंगे। इस जोन में सभा की सम्पत्तियों की जानकारी प्राप्त करने का अधिकार श्री शादी लाल जी महेन्द्रु एवं श्री देशबन्धु जी चोपड़ा पर होगा।

जोन दो में पटियाला, संगरूर, फतेहगढ़ साहिब, मोहाली, रोपड़ एवं मानसा होगा। इस जोन में सभा की सम्पत्तियों की जानकारी प्राप्त करने का उत्तरदायित्व श्री वीरेन्द्र कौशिक जी पटियाला और योगेश सूद जी मोरिण्डा का होगा।

जोन तीन में मोगा, फाजिल्का, फरीदकोट, बठिंडा, बरनाला, मुक्तसर होंगे। इस में सम्पत्तियों का विवरण प्राप्त करने का अधिकार श्री नीरज सूद जी एडवोकेट मोगा और श्री भारत भूषण जी मेनन बरनाला का होगा। यह दोनों महानुभाव इस जोन में सभा की सम्पत्तियों का विवरण इकट्ठा करेंगे और उसकी जानकारी सभा कार्यालय को देंगे।

जोन चार में गुरदासपुर, अमृतसर, तरनतारन, पठानकोट एवं फाजिल्का होगा। इस जोन में श्री परविन्द्र चौधरी जी बटाला एवं श्री रातुल शर्मा जी जालन्धर होंगे। यह दोनों महानुभाव जोन चार में सभा की सम्पत्तियों का विवरण इकट्ठा करेंगे और इसका पूरा रिकार्ड बना कर सभा कार्यालय को भिजवाएंगे। उन्होंने कहा कि जहां-जहां भी सभा की सम्पत्तियां हैं उन का सारा विवरण रविन्यू कोर्ट में जाकर पता करवाया जाये। इस उपसमिति ने पंजाब की सभी आर्य समाजों को भी निवेदन किया है जहां-जहां भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की सम्पत्ति या अन्य जायदाद हैं उसका सारा रिकार्ड रिवन्यू कोर्ट से निकलवा कर सभा कार्यालय को भिजवाने की व्यवस्था करें ताकि सभा की सम्पत्तियों की सुरक्षा की जा सके।

-शादी लाल महेन्द्रु बंगा

नामकरण संस्कार का महत्त्व

-ले० पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E, कैलाशनगर, फाजिल्का

(गतांक से आगे)

अज्ञानतावश निरर्थक या अस्वाभाविक नाम रखने का भी अत्याधिक प्रचलन है जिसके बारे में कोई सोच विचार नहीं करते। यथा-बच्ची का नाम रखा-परिणीता। वस्तुत: इसका अर्थ है-विवाहिता। ज़रा सोचिए, क्या जन्मते ही बच्ची विवाहित हो गई अथवा विवाहिता ही जन्मी ? बच्चे का नाम रखा-अक्षम। इसका अर्थ है-कमजोर। क्या परिवार कमज़ोर बच्चा चाहते हैं, स्वस्थ नहीं ? वस्तुत: ऐसे नामों की उपेक्षा की जानी चाहिए।

1. नामकरण के समय सावधानियां-नामकरण करते हुए सचेत रहें कि जो नाम रख रहे हैं, वह पूर्ण या आंशिक रूप से बालक-बालिका के अनुकूल भी हो। यथा-बच्चे का नाम रखा-नन्हा, नन्हें। अर्थ है-छोटा। क्या बच्चा छोटा ही रहेगा, बड़ा न होगा ? और जब बड़ा हो गया तो 'नन्हा' नहीं रहा। फिर भी लोग 'नन्हें' कह कर अनेक बार उपहास भी करेंगे। 'छोटूराम, छोटेराम' भी ऐसे ही नाम हैं। तभी तो 'काका हाथरसी' कहते हैं-

नाम रूप के भेद पर कभी किया है गौर ?

नाम मिला कुछ और तो शक्ल अक्ल कुछ और॥

'काका' छ: फुट लम्बे छोटूराम बनाए।

नाम दिगम्बर सिंह वस्त्र ग्यारह लटकाए॥

2. महापुरुषों, देवी-देवताओं के नाम पर नामकरण करते समय पिता-पुत्र, माता-पुत्री, बहन-भाई आदि के नामों के सम्बन्धों का भी ध्यान रखें। कहीं, ऐसे असंगत नाम न रखे जाएं, जिस पर लोग व्यंग्य करें। काका हाथरसी के शब्दों में-

कौशल्या के पुत्र का रखा दशरथ नाम।

'काका' कोई कोई रिश्ता बड़ा निकम्मा।

पार्वती देवी हैं शिवशंकर की अम्मा॥

यदि मां का नाम 'कौशल्या' है तो पुत्र का नाम 'दशरथ' न रखें। दशरथ-कौशल्या पति-पत्नी थे, पर यहां मां-बेटे बन गए। इसी प्रकार मां का नाम 'पार्वती' है तो पुत्र का नामकरण 'शिवशंकर' करना कहां की बुद्धिमत्ता है ? 'कमला शंकर' या 'रमाशंकर' नामकरण में भी कोई औचित्य नहीं। क्योंकि कमला, रमा (लक्ष्मी) विष्णु की पत्नी का नाम है और 'शंकर' शिव का। अत: कमलाशंकर, रमाशंकर इन दोनों नामों के योग में कोई साम्य नहीं।

3. कई बार संयुक्त नाम में एक शब्द तो सार्थक और सुन्दर होता है तो दूसरा सार्थक होते हुए भी भद्दा और हीनता सूचक। यथा-पीयूष पाचक। पीयूष का अर्थ है-अमृत और पाचक का रसोइया या पकाने वाला। भला इन दोनों शब्दों में क्या मेल ? अन्य शब्द है-चन्दनमल या सागरमल। इनमें चन्दन और सागर शब्द तो ठीक हैं परन्तु 'मल'-मैल या मलीनता का सूचक है।

कहते हैं, महर्षि दयानन्द के पास एक व्यक्ति कुछ जिज्ञासा लेकर आया। महर्षि ने उसका नाम पूछा। उस व्यक्ति ने कुछ संकोच के साथ उत्तर दिया-'महाराज! मुझे कूड़ामल कहते हैं।' महर्षि ने भी मनोरंजक उपहास करते हुए कहा-'क्यों भाई, कूड़े में कुछ कमी थी जो उस पर मल रख दिया ?'

कितनी करारी चोट की है महर्षि ने कुत्सित नामार्थ पर ? अत: हमें ऐसे कुत्सितार्थक-अर्ध-कुत्सितार्थक नामों से बचना चाहिए। नामकरण से पूर्व शब्दों के अर्थ अवश्य विचार लेना चाहिए।

कारण ? देखिए-बच्चे का नामकरण किया-तनुज। तनुज का अर्थ पुत्र है ? नहीं न ? सम्बन्धों के आधार पर भाई, चाचा, ताया, मामा कुछ भी हो सकता है। क्या पत्नी भी उसे तनुज-पुत्र समझेगी ? माता-पिता के लिए तो तनुज-पुत्र है, शेष के लिए नहीं। 'तनुजा' बेटी शब्द की भी यही स्थिति है।

'अनुज' का अर्थ छोटा भाई है। अनुज भी तो सभी के लिए छोटा नहीं होगा न ? अपने से छोटे भाई के लिए तो अग्रज ही रहेगा। पत्नी भी उसे अनुज-छोटा भाई नहीं समझेगी। अनुजा-छोटी बहन शब्द का भी ध्यान रखें।

4. जन्म स्थान, किसी मन्नत-स्थान के आधार पर अथवा बिना विचारे ही किसी स्थान के नाम पर किया जाने वाला नामकरण-मथुरादास, काशीराम, अयोध्या-प्रसाद, ब्रज बिहारी, मैथिलीशरण, पिंडीदास, लाहौरी राम, पिशोरीलाल, अजमेर सिंह, कश्मीरी लाल आदि नामकरण में कोई औचित्य नहीं।

5. जन्मदिन के आधार पर-मंगल को जन्मा मंगलसिंह, मंगलू, मंगलदेव, हनुमान्, बुध को जन्मा बुधराम, बुधसिंह आदि-यह भी अन्धविश्वास पर आधारित है।

6. कई बार अभिभावक इसलिए भी बच्चे का भद्दा, निरर्थक नाम रख लेते हैं कि कहीं बच्चे को नज़र न लगे, कुछ अशुभ न घटित हो। यथा-मंगनीराम, मर जाणा = मर दाना =मरदाना, गौरवर्ण को काला कहना आदि। यह भी अज्ञानता और अन्धविश्वास ही समझना चाहिए। इस धारणा में कोई तथ्यपूर्ण औचित्य नहीं। क्योंकि शुभ-अशुभ घटित होने में नाम का कोई आधार या कारण नहीं होता। अत: अच्छे, सार्थक नाम ही रखें।

7. कई बार प्रगतिशीलता, नवीनता या दूसरों से भिन्नता प्रकट करने के लिए कुछ अजीब सा रिवाज़ चल पड़ता है। जैसे आजकल नामकरण करने लगे हैं-शिवम्, सत्यम्, शुभम्, मंगलम्। वस्तुत: यह शब्द संस्कृत के हैं और नपुंसकलिंग में हैं। जबकि बच्चा पुरुष (पुल्लिंग) हैं। फिर पुरुष (पुल्लिंग) को नपुंसक क्यों बनाया जा रहा है, समझ में नहीं आता। बस, यही कहा जा सकता है कि यह सब अज्ञानवश और बिना सोचे समझे हो रहा है। शिक्षित जन भी उतनी ही त्रुटि कर रहे हैं जितनी कि अशिक्षितजन/इस ओर किसी का ध्यान जाता ही नहीं। पुरोहित-पण्डितवर्ग भी इस पर विचार नहीं करता। आर्यों में भी ऐसे नामों का प्रचलन होता जा रहा है। वैसे इन नपुंसकलिंग नामों को सुधार कर शिवकान्त, शिवेन्द्र, शिवेन्दु, सदृश नाम रखे जा सकते हैं। एक नाम और पढ़ने को मिला-सोहम्। यह शब्द स: + अहम् = सोऽहम् = सोहम् सन्धियुक्त शब्द है। इसका अर्थ है-वह मैं। सम्भवत: नामकरण करने वाले सज्जन ने इसके अर्थ पर विचार नहीं किया। ऐसा प्रतीत होता है कि वेदान्ती गुरू जी के उपदेश से प्रभावित होकर यह नाम रखा गया है। वरना इसमें कोई औचित्य नहीं।

8. गुरुओं द्वारा नामकरण-कई श्रद्धालु अपने गुरुओं से नाम पूछ लेते हैं। बस, जैसा उन्होंने बताया वैसा रख लिया। सोचने, समझने, विचारने का प्रश्न ही नहीं। एक सज्जन ने बेटी का नाम 'अनुराधा' रखा। मैंने कहा-"इससे और भी सुन्दर नाम हैं, उनमें से रखें।" उत्तर मिला-"न, न! यह गुरू जी का दिया हुआ नाम है।" देखा आपने! यह भी अन्धविश्वास नहीं तो और क्या है ?

9. नाम में वर्णों की संख्या-महर्षि दयानन्द ने "संस्कार विधि" में लिखा है कि पुत्र हो तो दो, चार, छ: और पुत्री हो तो एक, तीन, पांच अक्षरों वाला नाम रखें। वैसे उन्होंने इसका कोई कारण या औचित्य नहीं बताया।

मेरे विचार से नाम की सार्थकता, मधुरता एवं सुबोधता की ओर ही अधिक ध्यान देना चाहिए। वर्णों के समाक्षर दो, चार, छ: अथवा विषभाक्षर एक, तीन, पांच का वैज्ञानिक आधार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कपिल, कणाद, गौतम आदि महान् दार्शनिक ऋषियों के तीन अक्षरों वाले विषमाक्षर नाम थे तथा सीता, गार्गी, कुन्ती, लोपामुद्रा, मदालसा, मेघा, श्रुतिकीर्ति आदि प्रसिद्ध विदुषियां समाक्षर नामों वाली हो चुकी हैं। इन पर सम या विषमाक्षर का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अत: नामों की सुन्दरता, सुस्पष्टता, सार्थकता आदि पर ही अधिक ध्यान देना चाहिए, न कि वर्णों की संख्या पर क्योंकि यह नियम उतना व्यावहारिक प्रतीत नहीं होता।

जहां तक पुरुष, स्त्री के भेद होने का प्रश्न है, तो नाम के लिंग से ही स्पष्ट हो जाएगा। जैसे विजय पुलिंग और विजया स्त्रीलिंग अथवा विजय कुमार और विजय कुमारी में भी लिंगभेद स्पष्ट है। फिर भी इस सम्बन्ध में मेरा कोई दुराग्रह नहीं है। यदि कोई सज्जन तर्क के लिए ही तर्क करना चाहें तो अलग बात है। केवल पाण्डित्य-प्रदर्शन में कोई औचित्य नहीं। व्यावहारिकता एवं यथार्थता के समीप होना ही श्रेयस्कर है। इतनी सूक्ष्मता के साथ तो आर्यों में भी नामकरण नहीं किया जा रहा। तमाम आर्यों के नामों में वही दोष विद्यमान हैं, जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है। बड़े-बड़े व्याख्याता, उपदेशक और विद्वान् भी इन दोषों से नहीं बच सके हैं। फिर वर्णों की संख्या अथवा स्वर, व्यंजनों में से निर्धारित/चयनित अक्षरों पर क्यों अवलम्बित रहा जाए ?

मैं कैसा 'मरण' चाहता हूँ...।

-अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22 नगरनिगर क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर ग्वालियर

लोग कहते हैं कि मरना कोई नहीं चाहता। हाथ-पैरों से लाचार अंगविहीन, अंधत्व का जन्म से शिकार, भीषण रोगों से ग्रस्त किसी भी मनुष्य से पूछिए कि क्या वह मरना चाहता है ? उत्तर 'न' में ही मिलेगा। उसे भी मालूम है कि एक न एक दिन मरना पढ़ेगा। फिर भी वह अतीव पीड़ा-कष्ट भोग कर भी क्यों जीना चाहता है, यह अद्‌भुत पहेली है और मैं, जिसके सब अंग प्रत्यंग 76 वर्ष की आयु में शिथिल हो गये हैं पर सुचारू रूप से कार्यरत हैं, अपनी मृत्यु की प्लानिंग करना चाहता हूँ। शायद अब बहुत देर ही गई है।

संत प्रवर तुलसीदास जी कह गये हैं-हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि-हाथ। अगर ईश्वर-जीवन-मरण अपने पास नहीं रखता तो कोई उसे मानता ही नहीं। जीवात्मा के पास कर्म करने में स्वतंत्र, अनादि आत्मा तो है, पर शरीर तो परमात्मा द्वारा निर्मित है। जिसने दिया है, उसे लेने का भी पूरा-पूरा अधिकार है, यह मानना होगा। उसके द्वारा जीवन देने और लेने की प्रक्रिया एक बड़ी विचित्र, कठिन और आंशिक रूप से सुलझी हुई पहेली है। वेदवेत्ता इस प्रक्रिया को कर्मफल संज्ञा देते हैं। यह अत्यन्त पेचीदा प्रश्न है, इसलिये फिलहाल यही छोड़ता हूँ। मुझे तो मरण 'मृत्यु के विचार ने जकड़ रखा है।'

जनवरी से 20 जनवरी 2014 तक देश की राजधानी दिल्ली में चालीस मनुष्य, सड़कों पर ठण्ड में सिकुड़कर मर गये। यह संख्या एक दिन में टी.वी. चैनलों द्वारा प्रसारित की गई संख्या है। संपूर्ण दिल्ली में ही पूर्ण शीतऋतु में कितनी मृत्यु, भूख-प्यास, रहने का अभाव से हुई ज्ञात नहीं है। सम्पूर्ण उत्तर भारत की बात तो छोड़िए। इसका प्रसारण 25 जनवरी 2014 की शाम को हुआ। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या को। इसी समय राष्ट्रपति महोदय देश की गौरव गाथा गा रहे थे। सोचिए, जिस देश को स्वतंत्र हुए 67 वर्ष व्यतीत हो गए हों, उसके नागरिक इस तरह बेमौत मर जावें। कुत्ते की मौत को सबसे बुरी मौत माना जाता है। इन मौतों को किस श्रेणी में डालोगे ? ऐसी मौत की भयावहता मेरी कल्पना से भी बाहर है।

जून 2013 में अलकनन्दा द्वारा केदारनाथ मंदिर व उसके चारों ओर एक बड़े भू-भाग में भयंकर बाढ़ व भूस्खलन ने हजारों भक्तों-अभक्तों को लील लिया। वे बह गये या मिट्टी में दब गये।

मंदिर के गर्भगृह में जहाँ देवता विराजमान थे, लाशों व मलबे का अम्बार लग गया। मैं hope against hope-आशा के विपरीत आशा रख रहा था कि अब तो मूर्तिपूजक हिन्दूओं को संदेह से परे, विश्वास हो गया होगा कि जो जाग्रत देवता स्वयं अपने को नहीं बचा सका वह उनका कल्याण, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति, उनका पापों से मुक्ति व जन्म मरण से मुक्ति कैसे दिला पावेगा ?

केदारनाथ ही नहीं, समीपस्थ ग्रामवासियों को, होटल मालिकों, दुकानदारों को यही चिन्ता थी कि केदारनाथ मंदिर का यथाशीघ्र पुनरूद्धार हो जावे तो सब कार्य पूर्ववत् हो जावेंगे। मंदिर के ट्रस्टियों को भी चिन्ता थी कि जिस देवता की बदौलत एक लाख रूपया प्रतिदिन चढ़ावा मिलता है, उसका शुद्धिकरण यथाशीघ्र होना चाहिये। शुभ-मुहूर्त में पूजा-अर्चना प्रारम्भ हुई और उसी दिन शाम को मलबे से निकाली गई 263 लाशों के शवदाह (कैसे?) का भी समाचार आ गया। जिन्दगी और मौत साथ-साथ चलती है।

नहीं, मैं नहीं चाहूँगा कि केदारनाथ के गर्भगृह में, देवता के समक्ष मिट्टी में दबा पड़ा मिलूँ। मुझे केदारनाथ के दर्शन का पुण्य नहीं चाहिये।

समझदार लोग केदारनाथ ही नहीं, सोमनाथ, मथुरा और काशी-विश्वनाथ आदि के मंदिरों के विध्वंस और पुर्ननिर्माण की कथा अच्छी तरह जानते हैं। ये सब पूजा स्थल निरीह, गरीब, अशिक्षित धर्मभीरू हिन्दुओं के ही नहीं पूर्ण सम्पन्न, अति-सम्पन्न, बौद्धिक रूप से अत्यन्त प्रबुद्ध हिन्दू भक्तों के आस्था-स्थल पूर्णतया व्यापारिक-केन्द्र हैं। यह ऐसा व्यापार है जिसमें बिना विशेष इनवेस्टमेण्ट (पूँजी लगाए) लाभ ही लाभ है; हानि की तो मीलों तक कोई संभावना ही नहीं)

25 दिसम्बर 13 से 1 जनवरी 14 तक नासिक (महाराष्ट्र) के समीप स्थित शिरडी साँई बाबा के मंदिर में 17 करोड़ का चढ़ावा आया। प्रत्येक वर्ष गणेश चतुर्थी के पर्व पर मुम्बई के लालबाग के राजा व सिद्धिविनायक मंदिर में करोड़ों का चढ़ावा आता है। वैष्णोदेवी, तिरूपति के बाला जी आदि की बात नहीं कर रहा हूँ। पुट्टपार्थी के सत्यसाँई बाबा के आकस्मिक निधन (स्वघोषित मृत्यु तिथि से पूर्व) के पश्चात् उनके व्यक्तिगत कमरे से करोड़ों का कैश, स्वर्ण आदि मिला था। मैं समझना चाहता हूँ कि क्या केदारनाथ मंदिर का शिव (ईश्वर) इन सब मन्दिरों के ईश्वरों से कम शक्तिशाली, कम प्रभावकारी था ? प्राकृतिक तबाही में जब वह स्वयं न बच सका और न ही अपने हजारों भक्तों को बचा सका तो क्या गारण्टी है कि ऐसी ही किसी भीषण त्रासदी में इन मंदिरों के भगवान अपने अपने भक्तों को बचा पाएगें ? नहीं, नहीं मैं इनकी शरण में जाने पर, ऐसी ही किसी भीषण दुर्घटना में मरना नहीं चाहूँगा।

मेरी जानकारी के अनुसार सबसे पीड़ादायक मृत्यु, कैन्सर रोगी की होती है। व्यक्तिगत अनुभव तो मुझे है नहीं पर एक व्यक्ति को यह दारूण कष्ट भुगतते देखा है। चिकित्सकों को बहुत अच्छी तरह पता है कि इस बीमारी का कारण ज्ञात नहीं है। प्रत्येक केस में शल्य-क्रिया और केमोथैरपी द्वारा शत-प्रतिशत रोगमुक्त होने की संभावना नहीं है। कैंसर ग्रस्त रोगी की मृत्यु होगी और अत्यन्त पीड़ादायक मृत्यु। टर्मिनल स्टेज में मरीज को 'अफीम' (पैथेडिन) की बड़ी-बड़ी खुराके दी जाती है जिससे नींद बेहोशी में वह पीड़ा का अनुभव नहीं कर सके। नहीं, मैं ऐसी मौत नहीं चाहता।

एक अत्यन्त आत्मीय परिचित हैं। वर्षों से उन्हें जानता हूँ। कार्यालय में मुझसे वरिष्ठ थे। घर-परिवार में मेरा व मेरे परिवार का बहुत आना जाना रहा है। लगभग 85 वर्ष की आयु है। सदाबहार पत्नी पिछले दस वर्षों से बिस्तर पर पड़ी है। आंशिक रूप से मानसिक संतुलन खो चुकी है। दस वर्षों से पत्नी का मलमूत्र साफ करके, भीषण मानसिक त्रासदी झेलते हुए अब उनका मानसिक संतुलन बिगड़ रहा है। जब भी मिलते हैं, यही कहते हैं कि खुल्लर! यह सब क्या है ? किन कर्मों की सजा ये पा रही है और किन कर्मों की मैं ? पिछले 45वर्षों की दीर्घ अवधि में उनके या उनके परिवार के किसी भी सदस्य के किसी दोष या बुराई की बात कभी नहीं सुनी। ईश्वर न जाने किस दारूण मृत्यु की ओर इन दोनों प्राणियों को तिल-तिल घसीट रहा है। कर्मफल के समर्थक इसे पूर्व जन्म नहीं अनेक जन्मों के दोषों-पापों की सजा ही बतायेंगे। मैं, पूछना चाहता हूँ कि क्या मनुष्य का एक जन्म ही संपूर्ण पापों की सजा के लिये पर्याप्त नहीं होता ? मैं ऐसी मृत्यु भी कभी नहीं चाहूँगा।

मुझे दुर्घटना में अकस्मात् हुई मौत भी नहीं चाहिये। आजकल सम्पन्न वृद्धों को भी अकेले ही बुढ़ापा झेलना पड़ता है। ये ही आजकल लोभी, लुटेरों के आसान टारगेट बने हुए हैं। बड़ी बेरहमी से इनकी हत्या की जाती है, लूट-पाट की जाती है। हमारी भी यही स्थिति है। रात को बाथरूम जाते हुए अनेक बार ख्याल हो आता है कि क्या हम भी इसी निर्मम पीड़ा दायक मृत्यु के शिकार तो नहीं होंगे ?

प्रश्न यह उठता है कि क्या मैं या अन्य कोई व्यक्ति मौत का चुनाव कर सकते हैं ? शत-प्रतिशत सही उत्तर जीवात्मा के पास नहीं परमात्मा के पास मिलना चाहिये, क्योंकि जीवन-मरण उसके हाथ में हैं। ऋषि मुनियों ने वर्षो कड़ी तपस्या की, साधना की और परमात्मा से पूछा-हे प्रभु ! ज्ञान विज्ञान, मनुष्य के कल्याण के सब रास्ते तो आपने बता दिये, जीवन मरण के प्रश्न को भी हल कर दीजिये। प्रभु ने कहा-देख और समझ। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

एकेश्वरवाद का प्रबल प्रचारक-अथर्ववेद

-ले० शिव नारायण जी उपाध्याय कोटा (राज.)

वर्तमान काल में लगभग सभी आस्तिक धर्मावलम्बियों ने ईश्वर के एकत्व को स्वीकार कर लिया है परन्तु इसका प्रबल समर्थन तो केवल अथर्व वेद ने ही किया है। हम अपने इस छोटे से लेख में अथर्व वेद के मन्त्रों के आधार पर ही इस तथ्य को प्रमाणित करने का प्रयास कर रहे हैं। अथर्व वेद के अनुसार वेदाध्ययन का मूल लक्ष्य ईश्वर को जान लेना ही है क्योंकि उसके जान लेने पर फिर कुछ भी जानने को शेष नहीं रह जाता है।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्त अमीसमासतै।। -अथर्व. 9.10.18

पदार्थ-(यस्मिन्) जिस (अक्षरे) अविनाशी (परमे) सर्वोत्तम (व्योमन्) व्यापक ब्रह्म में (ऋचः) वेद विद्या और (विश्वे) सब (देवाः) दिव्य पदार्थ (अधि) ठीक-ठीक (निषेदुः) ठहरे हुए हैं। (यः) जो मनुष्य (तत्) उस ब्रह्म को (न वेद) नहीं जानता है वह (ऋचा) वेद विद्या से (किम्) क्या लाभ (करिष्यति) करेगा। (यः) जो पुरूष (इत्) ही (तत्) उस ब्रह्म को (विदुः) जानते हैं (ते अमी) वे ही पुरूष (सम्) शोभा के साथ (आसते) विराजते हैं। ईश्वर के स्वरूप को जानने का एक मात्र साधन वेदाध्ययन ही है।

ऋचाः पदं मात्रया कल्पयन्तोऽर्धर्चेन चाक्लृपुर्विश्वमेजत्।
त्रिपाद् ब्रह्म पुरूरूपं वितष्ठे तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्रः।। -अथर्व. 9.10.19

पदार्थ-(ऋचः) वेद वाणी से (पदम्) प्रापणीय ब्रह्म को (मात्रया) सूक्ष्मता के साथ (कल्पयन्ताः) विचारते हुए ऋषियों ने (अर्धर्चेन) समृद्ध वेद ज्ञान से (विश्वम्) संसार को (एजत्) चेष्टा कराते हुए ब्रह्म को (चक्लुपुः) विचारा। (त्रिपात्) तीन (भूत भविष्य और वर्तमान काल अथवा ऊँचे, नीचे और मध्यलोक) में गतिवाला (पुरूरूपम्) बहुत सौन्दर्य वाला (ब्रह्म) ब्रह्म (वि) विविध प्रकार के (तस्थे) ठहरा हुआ था। (तेन) इस ब्रह्म के साथ (चतस्रः) चारों बड़ी दिशायें (जीवन्ति) जीवन करती है।

ईश्वर एक ही है वह सर्वव्यापक और ज्योति स्वरूप है।

एको गौरेक एक ऋषिपिरेकं धामैकधाशिषः।
यक्षं पृथिव्यामेकवृदेक ऋतुर्नाति निरिच्यते।। -अथर्व.8.9.26

पदार्थ-(एकः) एक (सर्वव्यापक परमेश्वर) (गौः) लोकों का चलाने वाला (एकः) एक (एक ऋषिः) अकेला ऋषि (सृष्टि का मार्ग दर्शक) (एकम्) एक ब्रह्म (धाम) ज्योतिः स्वरूप है। (एकथा) एक प्रकार से (आशिषः) हित प्रार्थनाएं हैं। (पृथिव्याम्) पृथ्वी पर (एकवृत्) अकेला वर्तमान (यक्षम्) पूजनीय ब्रह्म (एकर्तुः) एक ऋतु वाला (एक रस वर्तमान परमात्मा) किसी से (न अति रिच्यते) नहीं जीता जाता है।

परब्रह्म परमेश्वर केवल एक है। उसमें अनन्त गुण होने के कारण उसके अनन्त गुण वाचक नाम है। विद्वान् लोग जानते है कि अनन्त नामधारी ब्रह्म एक ही है।

इन्द्रं मित्रं वरूणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरूत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं मातरिश्वानमाहुः।। -अथर्व. 9.10.28

पदार्थ-(अग्निम्) अग्नि (सर्वव्यापक परमेश्वर) को (इन्द्रम्) इन्द्र (बड़े ऐश्वर्य वाला) (मित्रम्) मित्र (वरूणम्) वरूण (श्रेष्ठ) (आहुः) ये (तत्वज्ञानी) कहते हैं। (अथो) और (सः) वह (दिव्यः) प्रकाशमय (सुपर्णः) सुन्दर पालन सामर्थ्य वाला (गरूत्मान्) स्तुति वाला (महान् आत्मा) है। (विप्राः) बुद्धिमान लोग (एकम्) एक (सत्) सत्ता वाले ब्रह्म को (बहुधा) बहुत प्रकार से (वदन्ति) कहते हैं। (अग्निम्) उसी अग्नि (सर्वव्यापक परमात्मा) को (यमम्) नियन्ता और (मात्तरिश्वानम्) आकाश में श्वास लेता हुआ (अर्थात्) आकाश में व्यापक (आहुः) वे बताते हैं।

अब हम उस ब्रह्म के स्वरूप के विषय में चिन्तन करते हैं।

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम्।
रश्मिभिर्नभ्र आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः।। -अथर्व. 13.4 (षट् पर्यायः) 3

पदार्थ-(सः) वह परमेश्वर (धाता) पोषण करने वाला और (सः) वह (विधर्ता) विचित्र प्रकार धारण करने वाला है, (सः) वह (वायुः) व्यापक (वा महाबली परमात्मा) और (उच्छ्रितम्) ऊँचा वर्तमान (नभः) प्रबन्धकर्ता अथवा नायक ब्रह्म है। (महेन्द्र) बड़ा ऐश्वर्यवान् (आवृतः) सब ओर से ढका हुआ (अन्तर्यामी परमेश्वर) (रश्मिभिः) किरणों द्वारा (आभृतम्) सब प्रकार पुष्ट किये हुए (नभः) मेघ मण्डल में (एति) व्यापक है

सोऽर्यमा स वरूणाः सं रूद्रः स महादेव।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्या वृतः।। -अथर्व. 13.4 (षट् पर्यायः) 4

पदार्थ-(सः) वह परमेश्वर (अर्यमा) श्रेष्ठों का मान करने वाला (सः) वह (वरूणः) श्रेष्ठ (सः) वह (महादेवः) देवाधि देव है। (शेष पूर्ववत्)

सो अग्निः स उ सूर्यः स. उ एव महायमः।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्या वृतः।। -अथर्व. 13.4 (षट् पर्यायः) 5

पदार्थ-(सः) वह परमेश्वर (अग्निः) व्यापक (सः उ) वही (सूर्यः) सूर्य वा प्रेरक (सः उ) वही (एव) निश्चय करके (महायमः) बड़ा न्यायकारी है। (शेष पूर्ववत्)

स एव मृत्युः सो ऽ मृतं सो ऽ भ्वं स रक्षः।। -अथर्व. 13.4 (षट् पर्यायः) 25

पदार्थ-(सः एव) वही परमेश्वर (मृत्युः) मरण करने वाला (सः) वही (अमृतम्) अमरपण का कारण (सः) वही (अभ्वम्) महान् (सः) वही (रक्षः) रक्षा करने वाला परब्रह्म है।

स रूद्रो वसुवनिर्वसुदेये नमोवाके वषट्कारोऽनु संहितः।। -अथर्व. 13.4 (षट् पर्यायः) 26

पदार्थ-(सः) वही (रूद्रः) ज्ञान दाता (वसुवनिः) श्रेष्ठों का उपकारी परमेश्वर (वसुदेये) श्रेष्ठों करके देने योग्य (नमोवाके) नमस्कार वचन में (वषट्कार) दान करने वाला (अनु) निरन्तर (संहितः) स्थापित है।

सहस्र बाहुः पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्यातिष्ठत् दशाङ्गुलम्।। -अथर्व. 19.6.1

पदार्थ-(पुरूषः) परिपूर्ण परमात्मा (सहस्र बाहुः) सहस्त्रों भुजाओं वाला (सहस्र आक्षः) सहस्त्रों नेत्रों वाला (सहस्र पात्) सहस्त्रों पैरों वाला है। (सः) वह (भूमिम्) भूमि को (विश्वतः) सब ओर से (वृत्वा) ढक कर (दश अङ्गुलम्) दश दिशाओं में व्याप्त वाले जगत् को (अति) लांघ कर (अतिष्ठत्) ठहरा है।

पुरूष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्।। -अथर्व. 19.6.4

पदार्थ-(यत्) जो कुछ (इदम्) यह (सर्वम्) सब है। (च) और (यत्) जो कुछ (भूतम्) उत्पन्न हुआ और (भाव्यम्) उत्पन्न होने वाला है, (उसका) (उत) और (अमृतत्वस्य) अमरपन का और (यत्) जो कुछ (अन्येन सह) दूसरे अर्थात् मोक्ष से भिन्न दुःख के साथ (अभवत्) हुआ है उसका भी (ईश्वरः) शासक स्वामी (पुरूषः) परिपूर्ण परमात्मा (एव) ही है।

भावार्थ-परमात्मा ही भूत, भविष्यत्, वर्तमान और सृष्टि, स्थिति, प्रलय का स्वामी होकर जीवों को उनके कर्मानुसार सुख और दुःख देता है।

य एतं देवमेकवृतं वेद।। -अथर्व. 13.4 (पर्यायः2) 15

पदार्थ-(यः) जो (एतम्) इस (देवम्) प्रकाश स्वरूप को (एकवृतम्) अकेले वर्तमान (परमात्मा) को (वेद) जानता है।

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
य एतं देवमेकवृतं वेद।। अथर्व. 13.4 (पर्यायः2) 16

न पञ्चमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।
य एतं देवमेकवृतं वेद।। -अथर्व. 13.4 (पर्यायः2) 17

नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।
य एतं देवमेकवृतं वेद।। -अथर्व. 13.4 (पयार्यः2) 18

पदार्थ-वह अकेला वर्तमान (न) न (द्वितीयः) दूसरा (न) न (तृतीयः) तीसरा (न) न (चतुर्थः) चौथा (अपि) ही (उच्यते) कहा जाता है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

शोक समाचार

आज आर्य गर्ल्ज़ स्कूल के प्रांगण में श्रीमती स्वच्छ सचदेवा प्रधाना स्त्री आर्य समाज, बठिण्डा सुपत्नी श्री निहाल चन्द जी सचदेवा मैंनेजर आर्य गo सीo सैo स्कूल बठिण्डा के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। समूह स्टाफ व बच्चों ने उस दिवगंत आत्मा के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किये। मैडम कटारिया ने बच्चों को बताया कि वह अपने नाम के अनुरूप निर्मल स्वभाव की मलिका थी। प्रिंसीपल सुषमा मेहता ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आर्य समाज के लिए उनका काम प्रशंसनीय था। और परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवगंत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और परिवार जनों को दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। प्रधान श्री कुलबन्त राय अग्रवाल एवम् मैंनेजमैंट मैंबर श्री अनिल अग्रवाल, डा. मनोहर लाल बांसल, श्री कृष्ण जटाना जी ने शोक व्यक्त किया। श्रीमती स्वच्छ सचदेवा का निधन 24 मई 2014 को हुआ।

श्रीमती शाहणी देवी बतरा पंचतत्व में विलीन

लुधियाना के प्रतिष्ठित आर्य समाजी बतरा परिवार की माता श्रीमती शाहणी देवी जी का 21 मई 2014 को प्रात: देहावसान हो गया। श्रीमती शाहणी देवी का जीवन पूर्णरूप से धार्मिक रहा। जीवन पर्यन्त वह नियमित रूप से अपनी धार्मिक दिनचर्या करती रहीं व प्रभु भक्ति में लीन रहीं। वह शांत व सौम्य स्वभाव वाली महिला थी जिनके मन में सबके लिए स्नेह व प्यार भरा था। माता जी व अपने पिता से उत्तर संस्कार व प्रेरणा लेकर उनके तीनों बेटे श्री श्रवण कुमार, श्री अजय कुमार व श्री राजेन्द्र कुमार तथा परिवार के अन्य सदस्य पूर्ण रूप से वैदिक विचारों से ओत प्रोत हैं व आर्य समाज की सेवा में कार्यरत हैं। माता जी का अन्तिम संस्कार 21 मई को सायं पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। लुधियाना के सभी आर्य पुरोहितों ने मंत्रोच्चारण किया।

25 मई रविवार को प्रात: श्री लक्ष्मी नारायण भाई रणधीर सिंह नगर की धर्मशाला में प्रार्थना सभा हुई जिसमें शांति यज्ञ किया गया व परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति व सद्गति के लिए प्रार्थना की गई। लुधियाना की समस्त आर्य समाजें तथा अन्य धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं की ओर से पूज्या माता जी को भावभीनीं श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बहुत संख्या में आर्यों ने प्रार्थना सभा में उपस्थित होकर माता जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। **-विजय सरीन**

आर्य समाज गुरुकुल विभाग का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर का वर्ष 2014-15 का चुनाव सर्वसम्मति से दिनांक 25 मई 2014 को हुआ जिसमें श्री नरेश मल्होत्रा को प्रधान, श्री इन्द्रजीत भाटिया को मंत्री और श्री राजीव गुलाटी को कोषाध्यक्ष चुना गया। इससे पूर्व आर्य समाज का आय-व्याय प्रस्तुत हुआ जिसे आर्य समाज की कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से पारित कर दिया। आर्य समाज की कार्यकारिणी को भंग कर सर्वसम्मति से श्री वेद बजाज जी को चुनाव अधिकारी मनोनित किया गया।

-मंत्री आर्य समाज

पृष्ठ 6 का शेष- एकेश्वरावाद.....

वह न (पञ्चम:) पांचवां (न) न (षष्ठ:) छठा (न) न (सप्तम:) सातवां (अपि) ही (उच्यते) कहा जाता है। वह न (अष्टम:) आठवां (न) न (नवम:) नवां (न) न (दशम:) दसवां (अपि) ही (उच्यते) कहा जाता है।

स सर्वस्मै वि पश्यति यच्च प्राणति यच्च न।
य एतं देवमेक वृतं वेद।। -अथर्व. 13.4 (पर्याय:2) 19

पदार्थ-(स:) वह परमेश्वर (सर्वस्मै) सब जगत् के लिए (वि) विविध प्रकार (पश्यति) देखता है। (यत्) जो (प्राणति) श्वास लेता है (च च) और (यत्) जो (न) नहीं श्वास लेता है।

वह परमात्मा अपने आप में पूर्ण है।

पूर्णात् पूर्णमुदचति पूर्ण पूर्णेन सिच्यते।
उतो तदद्य विद्याम यतस्तत् परिषिच्यते।। -अथर्व. 10.8.29

पदार्थ-(पूर्णात्) पूर्ण ब्रह्म से (पूर्णम्) सम्पूर्ण जगत् (उत् अचति) उदय होता है। (पूर्णेन) पूर्ण ब्रह्म द्वारा (पूर्णम्) सम्पूर्ण जगत् (सिच्यते) सींचा जाता है। (उतो) और भी (तत्) उस (कारण) को (अद्य) आज (विद्याम) हम जानें (यत:) जिस कारण से (तत्) वह (सम्पूर्ण जगत्) (परिषिच्यते) सब प्रकार सींचा जाता है।

अथर्व वेद में परमेश्वर के विषय में विस्तृत वर्णन हैं पर हम उसे संक्षेप में रखकर यहीं विराम देते हैं इति शम्।

पृष्ठ 5 का शेष- मैं कैसा.....

संसार के समस्त प्राणियों की रचना का कारण मैं हूँ। आत्मा को मानव का चोला भी मैंने ही दिया है। अन्य जीवधारियों की आत्मा को सामान्य बना दिया, परन्तु बुद्धि-विवेक नहीं दी। मानव को ही बुद्धि ज्ञान-विवेक और कर्म की स्वतंत्रता प्रदान कर दी। लगभग अपनी समस्त शक्तियों का उपभोग करने का रास्ता दिखा दिया पर जीवन-मरण अपने हाथ में रखा, क्योंकि मुझे मालूम था कि मानव नाम का यह प्राणी बुद्धि और स्वतंत्रता दोनों का ही दुरूपयोग अधिक और सदुपयोग कम करेगा। मनुर्भव के उपदेश को वह अनसुना ही करेगा।

देखो ना, जिस व्यक्ति ने जीवन में उन्नति करने में दूसरों का अहित नहीं किया। भयंकर विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य को छोड़कर कोई कुटिल मार्ग नहीं अपनाया। यदि जीवन में उसकी सफलता चमत्कारिक नहीं रहीं फिर भी वह पूर्णतया संतुष्ट होकर जीवन यापन करता रहा। निष्ठावान रहा। आत्मिक सुख और शांति उसकी जीवन संगिनी बनी रही। ऐसा ही व्यक्ति सार्थक जीवन जीता है और ऐसा ही व्यक्ति 'जीवेम शरद: शतम्' की प्रार्थना करने का हक रखता है और उसे ही प्रभु शांतिपूर्वक मृत्यु की महानिद्रा को सौंप देता है।

ऐसे व्यक्ति का निर्माण किया जाता है, अपने आप नहीं बनता। उसे बचपन से ही नहीं, वरन् गर्भाधान से ही संस्कारवान बनाया जाता है। उसे सत-पथ पर चलने की प्रेरणा, योग्यता और सामर्थ्य प्रदान किया जाता है। सौ वर्ष के लम्बे जीवनकाल में अथवा जितने वर्षो का उसको जीवन मिला हो, समस्त झंझावातों को झेलकर जब वह जीवन के अवसान की ओर बढ़ता है, तब उसे पूर्णता का सुख मिलता है और शांति की मृत्यु मिलती है। सोते-सोते, बात करते-करते प्राण प्रखेरू उड़ जाते हैं। लोग कहते हैं कि एक भला आदमी चला गया। मेरी माँ और बाऊजी तथा परिवार के दो तीन सदस्य इसी तरह अलबिदा हुए। हे प्रभु ! मुझे भी ऐसा ही मरण देना।

नोट :-28 जनवरी 2014 को यह लेख मैंने लिखा था। अभी टाइप बी नहीं कराया था और कुछ रूक कर पत्रिकाओं को भेजने का विचार कर रहा था पर मुझे क्या पता था कि ठीक 14 दिन बाद ही नियन्ता मृत्यु का आभास करा देगा। दिनांक 11 फरवरी 2014 सुबह 10:30 बजे ब्रेन हैमरेज का पहिला अटैक हुआ। लगभग अचेतावस्था में यथाशीघ्र न्यूरोफिजियशन के पास ले जाया गया। परिवार क्लिनिक, ग्वालियर में तीन दिन आई.सी.यू. में रखकर पर भेज दिया गया। पुन: दिनांक 24 फरवरी 2014 को दुबारा ब्रेन हेमरेज हो गया। घर से ही??? पूर्ण अचेतावस्था में परिवार क्लिनिक ग्वालियर ले जाया गया। शाम 8 बजे ब्रेन ऑपरेशन किया गया। पूर्व रात 1 बजे से शाम 8 बजे यानि 19 घण्टे नियन्ता ने अपनी गोद में रखा, फिर शल्य चिकित्सक न्यूरोसर्जन डॉo जेoपीo गुप्ता के माध्यम से वापिस लौटा दिया-पूरी मानसिक और शारीरिक शक्तियों के साथ। अब मेरे समक्ष प्रश्न यह है कि क्यों लौटाया? जीवन के समस्त दायित्वों का निर्वहन कर चुका था। महर्षि का ''तर्पण'' भी कर दिया था और शेष जीवन ''अर्पण'' कर दिया था-(दो पुस्तकें लिखकर)। माँग भी लिया था कि कैसा ''मरण'' चाहता हूँ पर नियन्ता के बुलावे का इंतजार था। नियन्ता ने बुलावा भेजा भी पर रास्ते से लौटा दिया। पौराणिक होता तो लिखता-यमदूत को लगा होगा कि गलत व्यक्ति को ले जा रहा हूँ इसलिये वह वापिस छोड़ गया। मुझे पहिले पौराणिक सावित्री-सत्यवान् की कथा पर विश्वास नहीं था, पर अब विश्वास हो रहा है।

एक दिन हम पति पत्नी बात कर रहे थे। मैंने पत्नी से कहा-हम दोनों की बहुत आयु हो चुकी है। उसी समय 75 वर्ष-73 वर्ष। दोनों में से कोई भी जा सकता है। अगर तुम चली जाओगी तो मेरा तो बिलकुल कबाड़ा हो जाएगा, क्योंकि मेरे व्यक्तित्व में लोच नहीं है, ढूँढ हूँ। पत्नी ने उत्तर दिया-मेरे जाने से तुम्हारा आधा नुकसान होगा, क्योंकि मैं तुम्हारी अर्द्धांगिनी हूँ और तुम्हारे जाने से तो मेरा सब कुछ चला जाएगा। पत्नी की यह बात जब मुझे सदैव याद रहती है तो विधाता को क्यों नहीं ? क्या उसके लिये ही मुझे लौटाया है ? विधाता का लिखा किसने पढ़ा है?

आर्य समाज वेद मंदिर आर्य नगर जालन्धर का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर, जालन्धर का शानदार समापन समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ 19 मई से 25 मई तक बहुत धूमधाम से मनाया गया। 19 मई से 25 मई तक पारिवारिक सत्संग हुए। श्री जगत वर्मा संगीत रत्न जी ने बहुत ही सुन्दर दिल को छू लेने वाले भजनों द्वारा मन को जीत लिया। मिल के सत्संग लाया, प्रभु जी तेरे भगतां ने, सत्संग वाली नगरी चल रे मनां, ओ३म्-ओ३म् बोलो जी, ओ३म्-ओ३म् बोलो आदि भजनों पर लोग मस्ती में झूमने लगते। श्रद्धेय आचार्य डा. महावीर जी मुमुक्षु वैदिक प्रवक्ता द्वारा ईश्वर क्या है? उसको कैसे पाया जा सकता है? ईश्वर है कि नहीं उसका स्वरूप क्या है? कैसे अनुभव किया जा सकता है? हम आर्य समाज में ही क्यों आये? महर्षि दयानन्द जी के बताये हुए मार्ग पर चलकर ईश्वर को कैसे पाया जा सकता है? स्वामी जी द्वारा सामाजिक और क्रान्तिकारी जैसे विषयों पर व नारी जाति के लिए किये गये उत्थान जैसे विषयों पर बहुत ही प्रभावशाली ढंग से अपने प्रवचनों द्वारा लोगों को मन्त्र मुग्ध करते रहे। इन प्रवचनों के प्रभाव के कारण पारिवारिक सत्संग में उपस्थिति बड़े-बड़े समारोह जैसी होती रही। सातों दिन आर्य नगर में ऋषि मेला चलता रहा।

25 मई 2014 को विशेष कार्यक्रम की शुरूआत हवन यज्ञ के द्वारा यज्ञ के ब्रह्मा डा. महावीर जी मुमुक्षु द्वारा प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न करवाया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान का सौभाग्य श्री निर्मल आर्य बस्ती बावा खेल को प्राप्त हुआ। श्री सुरिन्द्र कुमार, विनोद कुमार दियोल नगर, नन्द लाल गढ़ा भी उन के साथ यज्ञ में मौजूद रहे। पांच हवन कुंड़ों पर हवन यज्ञ किया गया। जिसमें सैंकड़ों लोगों ने भाग लिया। यज्ञ के बाद सभी ने आशीर्वाद प्राप्त किया और मुमुक्षु जी के हाथों फल का प्रसाद ग्रहण किया। आये हुये महानुभावों ने प्रातराश: ग्रहण किया। 11 बजे प्रसिद्ध समाज सेवक श्री अविनाश घई एम.डी. यूनीक ग्रुप द्वारा ध्वजारोहण किया गया। आर्य समाज की ओर से स्मृति चिन्ह और सरोपा भेंट किया गया। मानव, साहिल, दिव्या, आरती व वर्षा ने बहुत ही सुन्दर भजन कहे 'टनक-टनक टनकार वेदां वाले दी' भजन पर लोगों ने खूब इनका हौंसला बढ़ाया। श्री राजेश प्रेमी व श्री सुरिन्द्र कुमार जी ने भी भजन गाकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। आर्य समाज के खचाखच भरे पंडाल को श्री जगत वर्मा जी ने भजनों द्वारा एक बार फिर तालियों के साथ झूमने को मजबूर कर दिया। सारी संगत को प्रभु से जोड़ दिया। लोग झूम-झूम कर भजन कीर्तन कर रहे थे।

आर्य समाज वेद मंदिर आर्य नगर जालन्धर के उत्सव पर पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी को सम्मानित करते हुये श्री सरदारी लाल जी आर्य, प्रसिद्ध समाज सेवक अविनाश घई, दविन्द्र शर्मा सभा उप प्रधान, आचार्य महावीर मुमुक्षु, सुदेश रत्न, वेद आर्य, सतपाल, अनिल आर्य, तिलक राज व तरसेम लाल।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री देवेन्द्र शर्मा उप प्रधान ने भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा को और भी बढ़ा दिया। आर्य समाज की ओर से सभा प्रधान जी का जोरदार स्वागत किया गया। सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने बहुत ही जोशीला व तेजस्वी भाषण दिया। उन्होने आर्य समाज के सफल कार्य-क्रम की बधाई दी और प्रसन्नता जाहिर की और कहा कि हमें आर्य समाज में आना चाहिए। वेद के मन्त्र हमें क्या उपदेश देते हैं? उन पर अमल करना चाहिए, एक आर्य समाज ही है जो मन्त्रों की किताबें देती है व कहती है सभी पढ़ो और दूसरों को भी सुनाओ। हम सभा की ओर से आधे दाम पर किताबें देते हैं। हमें पुण्य के कार्य करने चाहिए और शिविर लगाने चाहिए। इस समय लोग हमारी ओर देख रहे हैं उनको हम पर बहुत उम्मीदें हैं। उन्होंने कहा जो भी आर्य समाज का काम करेगा उसको सभा की ओर से पूर्ण सहयोग दिया जायेगा। श्री देवेन्द्र नाथ सभा उप प्रधान ने अपने विचार प्रकट किये। बाबू सरदारी लाल जी आर्य रत्न ने अपने अध्यक्षीय भाषण में छोटों को आशीर्वाद दिया और सफल सम्मेलन की बधाई दी। आर्य समाज की ओर से श्री सरदारी लाल जी का सम्मान किया गया। आर्य समाज के कार्यक्रम को सफल बनाने में जालन्धर की आर्य समाजों से आर्य समाज भार्गव नगर से प्रधान राज कुमार जी व सुदेश रत्न जी अपने साथियों सहित पहुंचे। श्री सम्मा राम प्रधान आर्य समाज ऋषि दयानन्द नगर गढ़ा, श्री अश्वनी कुमार प्रधान आर्य सभा कबीर नगर, राज पाल प्रधान व तिलक राज गांधी नगर-1, श्री सूबेदार अमर नाथ जी प्रधान गांधी नगर-2, श्री विशम्बर दास जी प्रधान बावा खेल, श्री यश पाल प्रधान, महिन्द्र पाल दानिशमंदा भारी गिनती में पधारे। अन्त में श्री वेद आर्य महामन्त्री ने आये हुए सभी महानुभावों, धर्म प्रेमी सज्जनों तथा बहनों का कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद किया तथा सहयोगियों सर्वश्री सतपाल, तिलक राज आर्य, अनिल आर्य, कमल मोखा, सुरिन्द्र कुमार, तरसेम लाल, जगदीश, विशाल व नगर निवासियों की भी प्रशंसा की। शान्ति पाठ के बाद हजारों लोगों ने ऋषि लंगर खाया और ऋषि का गुणगान किया।

-वेद आर्य मन्त्री आर्य समाज वेद मन्दिर, आर्य नगर, जालन्धर

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।